



Tangdasti Ke Asbaab Aur Un Ka Hal (Hindi)

तरमीम व इजाफा और तखीज के साथ

तंगदस्ती के अस्बाब और उन का हल

इस रिसाले में मुला-हजा फरमाएं

मोहताजी किसे कहते हैं ?

ह्याजत मन्द गनी हो गया

ऐशो इशरत में वुसअत

रोज़ी में ब-र-कत का बेहतरीन नुस्खा

अच्छी अच्छी नियतों का फल

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

शो 'बए इस्लाही कुतुब



मक-त-बतुल मदीना®

दा'वते इस्लामी



फैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग्गीचे के पास, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net

أَحْمَدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ الْمُرْسَلِينَ أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

तंगदस्ती के अस्बाब और उन का हल

येह रिसाला (तंगदस्ती के अस्बाब और उन का हल)

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब किया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल खत में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail :

translationmaktabhind@dawateislami.net

पेश लफ़्ज़

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-जवी जि़याई **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** की जाते मुबा-रका यकीनन मोहताजे तअरुफ़ नहीं ।

आप **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** शरीअते मुतहहरा और तरीक़ते मुनव्वरह की वोह यादगारे सलफ़ शख़िसय्यत हैं जो कि कसीरुल करामात बुजुर्ग होने के साथ साथ इल्मन व अ-मलन, कौलन व फ़े'लन, जाहिरन व बातिनन अहकामाते इलाहिय्यह की बजा आ-वरी और सु-नने न-बविय्यह की पैरवी करने और करवाने की भी रोशन नज़ीर हैं । आप अपने बयानात, तहरीरात, मल्फूज़ात और मक्तूबात के ज़रीए अपने मु-तअल्लिक़ीन व दीगर मुसलमानों को इस्लाहे आ'माल की तल्क़ीन फ़रमाते रहते हैं ।

الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ आप के यक-रंग काबिले तक्लीद मिसाली किरदार, और ताबेए शरीअत बे लाग गुफ़्तार ने सारी दुन्या में लाखों मुसलमानों बिल खुसूस नौ जवानों की जिन्दगियों में म-दनी इन्क़लाब बरपा कर दिया है ।

चूँकि सालिहीन के वाकिअत में दिलों की जिला, रूहों की ताजगी और फ़िक्रो नज़र की पाकीजगी पिन्हां है । लिहाज़ा उम्मत की इस्लाह व ख़ैर ख़्वाही के मुक़द्दस जज़्बे के तहत शो 'बए इस्लाही कुतुब (मजलिस अल मदीनतुल इल्मिय्या) ने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ की हयाते मुबा-रका के रोशन अब्बाब, म-सलन आप की इबादात, मुजा-हदात, अख़्लाकिय्यात व दीनी ख़िदमात के वाकिअत के साथ साथ आप की ज़ाते मुबा-रका से ज़ाहिर होने वाली ब-रकात व करामात और आप की तस्नीफ़ात व मक्तूबात, बयानात व मल्फूज़ात के फुयूज़ात को भी शाएअ करने का क़स्द किया है । इस सिल्सिले में आप مَدُّظَلَّةُ الْعَالِي के मल्फूज़ात और तहरीरी रसाइल से माखूज़ रिसाला “तंगदस्ती के अस्बाब और उन का हल” पेशे ख़िदमत है । (اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ) इस का बग़ौर मुता-लअ “अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश” की म-दनी सोच पाने का सबब बनेगा ।

शो 'बए इस्लाही कुतुब
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةَ وَالسَّلَامَ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

शैतान लाख सुस्ती दिलाए इस मुख्तसर रिसाले का
अव्वल ता आखिर मुता-लआ फरमा लें

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

आशिके आ'ला हज़रत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-जवी ज़ियाई الْعَالِيَةِ अपने रिसाले ज़ियाए दुरूदो सलाम में फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ नक्ल फ़रमाते हैं कि "जो मुझ पर शबे जुमुआ और जुमुआ के रोज़ सो बार दुरूद शरीफ़ पढ़े, अल्लाह तआला उस की सो हाजतें पूरी फ़रमाएगा।"

(तफ़ीरु रन्तूर, ज ०१, प १०३, दारुल्फ़कीरौत)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

तंगदस्ती के अस्बाब और उन का हल

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ हम मुसलमान हैं और मुसलमान का हर काम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे हबीब عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की रिज़ा के लिये होना चाहिये, मगर आह ! हमारी बे अ-मली ! शायद इसी वजह से आज हमें त्रह त्रह की परेशानियों का सामना है, कोई

क़र्ज़दार है तो कोई घरेलू ना चाक़ियों का शिकार, कोई तंगदस्त है तो कोई बे रोज़गार, कोई औलाद का तलब गार है तो कोई ना फ़रमान औलाद की वजह से बेज़ार, अल गरज़ हर एक किसी न किसी मुसीबत में गिरिफ़्तार है। इन में सरे फ़ेहरिस्त तंगदस्ती और रिज़क़ में बे ब-र-कती का मस्अला है शायद ही कोई घराना इस परेशानी से महफूज़ नज़र आए। तंगदस्ती का स-बबे अज़ीम खुद हमारी बे अ-मली है जिस को सूरए शूरा में इस तरह बयान किया गया है :

وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فَبِمَا
 كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُو عَنْ
 كَثِيرٍ ۝ (پ ۲۵، التّورّیٰ آیت ۳۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हें जो मुसीबत पहुंची। वोह उस के सबब से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया और बहुत कुछ तो मुआफ़ कर देता है।

इस लिये हमें चाहिये कि आ'माले बद से तौबा कर के नेक आ'माल में मशगूल हो जाएं। अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ सूरए आ'राफ़ में इर्शाद फ़रमाता है :

إِنْ رَحِمْتَ اللَّهُ قَرِيبٌ مِّنَ
 الْمُحْسِنِينَ ۝ (پ ۱۸، الأعراف: ۵۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह की रहमत नेकों से क़रीब है।

ना गुप्तह बेह हालात

अफ़सोस ! आज का मुसलमान अपने मसाइल के हल के लिये मुश्किल तरीन दुन्यवी ज़राएअ़ इस्ति'माल करने को तो तय्यार है मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे **रसूल** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के अता कर्दा रोज़ी में ब-र-कत के आसान ज़राएअ़ की तरफ़ उस की तवज्जोह नहीं। आज कल बे रोज़गारी व तंगदस्ती के गम्भीर मसाइल ने लोगों को बेहाल कर दिया है। शायद ही कोई घर ऐसा हो जो तंगदस्ती का शिकार न हो।

याद रखिये ! रिज़्क़ में ब-र-कत के तालिब के लिये ज़रूरी है कि वोह पहले रिज़्क़ में **बे ब-र-कती के अस्बाब** से आगाही हासिल कर के उन से छुटकारा हासिल करे, ताकि रिज़्क़ में ब-र-कत के ज़राएअ़ हासिल होने पर कोई रुकावट पेश न आए।

इस सिल्लिसले में अहादीसे मुबा-रका की रोशनी में तंगदस्ती के अस्बाब और आख़िर में इन का हल भी पेश करने की कोशिश की गई है। बग़ौर मुता-लआ फ़रमाएं और अपने रोज़ मर्रा के मा'मूलात में इस का निफ़ाज़ कर के रिज़्क़ में ब-र-कत के अस्बाब कीजिये।

म-दनी फूल

अमीर अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ फ़रमाते हैं कि रिज़क़ में ब-र-कत का सिर्फ़ येह मा 'ना न समझें कि दौलत का अम्बार लग जाए बल्कि कम रिज़क़ में गुज़ारा हो जाना और जो मिल जाए उस पर क़नाअत की सआदत पाना भी बहुत बड़ी ब-र-कत है।

तंगदस्ती की वुजूहात

अमीर अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ने एक बार फ़रमाया, आज कल रिज़क़ की बे क़दरी और बे हुर्मती से कौन सा घर ख़ाली है, बंगले में रहने वाले अरब पती से ले कर झोंपड़ी में रहने वाला मजदूर तक इस बे एहतियाती का शिकार नज़र आता है, शादी में किस्म किस्म के खानों के जाएअ होने से ले कर घरों में बरतन धोते वक्त जिस तरह सालन का शोरबा, चावल और उन के अज़्ज़ा बहा कर مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ नाली की नज़्र कर दिये जाते हैं, इन से हम सब वाकिफ़ हैं, काश ! रिज़क़ में तंगी के इस अज़ीम सबब पर हमारी नज़र होती।

उम्मुल मुअमिनीन आइशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती

हैं, ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपने मकाने आलीशान में तशरीफ़ लाए, रोटी का टुकड़ा पड़ा हुआ देखा, उस को ले कर पोंछा फिर खा लिया और फ़रमाया, आइशा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا) अच्छी चीज़ का एहतिराम करो कि येह चीज़ (या'नी रोटी) जब किसी क़ौम से भागी है लौट कर नहीं आई ।

(सनن ابن ماجه كتاب الاطعمه باب النسي عن القائله طعامها لم يردت ۳۳۵۳، ج ۳، ص ۳۹، دار المعرفه بيروت)

तिजारत में क़सम से ब-र-कत ज़ाइल हो जाती है

आज कल कई दुकान दार रोज़ी में बन्दिश ख़त्म करवाने के लिये ता'वीज़ात, अ-मलियात और दुआ के ज़राएअ तो अपनाते हैं, मगर रोज़ी में ब-र-कत के ज़ाइल होने का एक बड़ा सबब ख़रीदो फ़रोख़्त में बे एहतियाती, इस की तरफ़ तवज्जोह नहीं करते ।

हदीसे पाक में है कि प्यारे म-दनी आका सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि, बैअ (या'नी तिजारत) में क़सम की कसरत से परहेज़ करो कि येह अगर्चे माल को बिकवा देती है मगर ब-र-कत को मिटा देती है ।

(صحیح مسلم، کتاب المساقات والامر ارضه، باب النسي عن الخلف، الحديث ۱۶۰۷، ۸۶۸، دارالमائن حزم بيروت)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गौर फ़रमाएं जब सच्ची क़सम की कसरत का येह हाल है तो झूटी क़समों और रिज़क़ में हराम की आमेज़िश का कितना वबाल होगा ।

इस लिये अक्सर अहादीसे मुबा-रका में जहां तिजारत का ज़िक्र आता है, साथ ही साथ झूट बोलने और झूटी क़सम खाने की मुमा-न-अत भी आती है और येह हक़ीक़त है कि अगर ताजिर अपने माल में ब-र-कत देखना चाहता है तो सच्ची क़सम खाने से भी परहेज़ करे ।

राशन में बे ब-र-कती

आज कल येह शिक्वा भी आम है कि पहले जितना राशन महीने भर चलता था, अब 15 दिन में ही ख़त्म हो जाता है । काश ! कि हम इस पर भी गौर कर लेते कि खाना खाते वक़्त इब्तिदा में बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ लेते हैं या नहीं ?

शैतान की शिर्कत

खाने या पीने से पहले बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ना सुन्नत है । हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ रिवायत करते हैं कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने अ़लीशान है कि

जिस खाने पर बिस्मिल्लाह न पढ़ी जाए शैतान उस खाने में शरीक हो जाता है। (صحیح مسلم، کتاب الاثریة، باب آداب الطعام، الحدیث ۲۰۱۷، ج ۱، دار ابن کثیر، بیروت)

इस लिये खाने से पहले बिस्मिल्लाह शरीफ़ न पढ़ने से खाने की ब-र-कत जाइल हो जाती है। अगर एक भी शख्स बिगैर बिस्मिल्लाह पढ़े खाने में शामिल हो जाए तो भी खाने से ब-र-कत जाइल हो जाती है।

हज़रते सय्यिदुना अब अय्यूब अन्सारी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ “हम सरकारे मदीना (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) की खिदमते बा ब-र-कत में हाज़िर थे। खाना पेश किया गया, इब्तिदा में इतनी ब-र-कत हम ने किसी खाने में नहीं देखी, मगर आखिर में बड़ी बे ब-र-कती देखी।” हम ने अर्ज़ की, “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ऐसा क्यूं हुवा ?” इर्शाद फ़रमाया, “हम सब ने खाना खाते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ी थी। फिर एक शख्स बिगैर बिस्मिल्लाह पढ़े खाने को बैठ गया, उस के साथ शैतान ने खाना खा लिया।” (شرح السنن، کتاب الاطعمه، باب التسمیة علی الاکل، الحدیث ۲۸۱۸، ج ۶، ۶۱، دارالکتب العلمیة)

उ-लमाए किराम फ़रमाते हैं, नाखुनों का बढ़ा हुवा होना (भी) तंगिये रिज़क़ का सबब है। (चालीस दिन से जाइद नाखुन

बढ़ाना मकरूहे तहरीमी है)

(الفتاوى المصديه، كتاب الكراهية، الباب التاسع عشر، ج 5، ص 358، مطبوعه كويت)

तंगदस्ती के “44” अस्बाब

دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ اَمِيرِ اَهْلِهِ سُنَنَاتِ تَرِيكَتِ شَيْخِ الْبَلْبَلَا

अपनी मशहूरे ज़माना तस्नीफ़ “फ़ैज़ाने सुन्नत” के बाब “आदाबे त़आम” में स. 88 ता 90 पर तहरीर फ़रमाते हैं :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस तरह रोज़ी में ब-र-कत की वुजूहात हैं इसी तरह रोज़ी में तंगी के भी अस्बाब हैं अगर इन से बचा जाए तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** रोज़ी में ब-र-कत ही ब-र-कत देखेंगे । आप की मा'लूमात के लिये तंगदस्ती के 44 अस्बाब अर्ज़ करता हूँ ।

﴿1﴾ बिगैर हाथ धोए खाना खाना, ﴿2﴾ नंगे सर खाना, ﴿3﴾ अंधेरे में खाना खाना, ﴿4﴾ दरवाज़े पर बैठ कर खाना, ﴿5﴾ मय्यित के क़रीब बैठ कर खाना, ﴿6﴾ जनाबत (या'नी जिमाअ या ऐहतिलाम के बा'द गुस्ल से क़ब्ल) खाना खाना, ﴿7﴾ चारपाई पर बिगैर दस्तर ख़वान बिछाए खाना, ﴿8﴾ निकले हुए खाने में देर करना, ﴿9﴾ चारपाई पर खुद सिरहाने बैठना और खाना पाइंती

(या'नी जिस तरफ़ पाउं किये जाते हैं उस हिस्से) की जानिब रखना, ﴿10﴾ दांतों से रोटी कतरना, (बर्गर वगैरा खाने वाले भी एहतियात फ़रमाएं) ﴿11﴾ चीनी या मिट्टी के टूटे हुए बरतन इस्ति'माल में रखना ख़्वाह इस में पानी पीना (बरतन या कप के टूटे हुए हिस्से की तरफ़ से पानी, चाय वगैरा पीना मक्रूह है, मिट्टी के दराड़ वाले या ऐसे बरतन जिन के अन्दरूनी हिस्से से थोड़ी सी भी मिट्टी उखड़ी हुई हो उस में खाना न खाइये कि मैल कुचैल और जरासीम पेट में जा कर बीमारियों का सबब बन सकते हैं), ﴿12﴾ खाए हुए बरतन साफ़ न करना, ﴿13﴾ जिस बरतन में खाना खाया उसी में हाथ धोना, ﴿14﴾ ख़िलाल करते वक़्त जो रेशा व ज़रात वगैरा दांतों से निकले उसे फिर मुंह में रख लेना, ﴿15﴾ खाने पीने के बरतन खुले छोड़ देना, (खाने पीने के बरतन बिस्मिल्लाह कह कर ढांक देने चाहिएं कि बलाएं उतरती हैं और ख़राब कर देती हैं फिर वोह खाना और मशरूब बीमारियां लाता है), ﴿16﴾ रोटी को ख़्वार रखना कि बे अ-दबी हो और पाउं में आए ।

(मुलख़वस अज़ : सुन्नी बिहिश्ती ज़ेवर, स. 595 ता 601)

हज़रते सय्यिदुना इमाम बुरहानुद्दीन ज़रनूजी

رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने तंगदस्ती के जो अस्बाब बयान फ़रमाए हैं उन में

येह भी हैं : ﴿17﴾ ज़ियादा सोने की आदत (इस से जहालत भी पैदा होती है) ﴿18﴾ नंगे सोना, ﴿19﴾ बे हयाई के साथ पेशाब करना (लोगों के सामने आम रास्तों पर बिला तकल्लुफ़ पेशाब करने वाले ग़ौर फ़र्माण) ﴿20﴾ दस्तर ख़्वान पर गिरे हुए दाने और खाने के ज़र्रे वग़ैरा उठाने में सुस्ती करना ﴿21﴾ प्याज़ और लहसन के छिल्के जलाना, ﴿22﴾ घर में कपड़े से झाड़ू निकालना ﴿23﴾ रात को झाड़ू देना ﴿24﴾ कूड़ा घर ही में छोड़ देना ﴿25﴾ मशाइख़ के आगे चलना ﴿26﴾ वालिदैन को उन के नाम से पुकारना ﴿27﴾ हाथों को गारे या मिट्टी से धोना । ﴿28﴾ दरवाज़े के एक हिस्से से टेक लगा कर खड़े होना ﴿29﴾ बैतुल ख़ला में वुजू करना ﴿30﴾ बदन ही पर कपड़ा वग़ैरा सी लेना, ﴿31﴾ चेहरा लिबास से खुश्क कर लेना ﴿32﴾ घर में मकड़ी के जाले लगे रहने देना ﴿33﴾ नमाज़ में सुस्ती करना ﴿34﴾ नमाज़े फ़ज़्र के बा'द मस्जिद से जल्दी निकल जाना ﴿35﴾ सुब्ह सवेरे बाज़ार जाना ﴿36﴾ देर गए बाज़ार से आना ﴿37﴾ अपनी औलाद को “कोसनै” (या'नी बद दुआएं) देना (अक्सर औरतें बात बात पर अपने बच्चों को बद दुआएं देती हैं और फिर तंगदस्ती के रोने भी रोती हैं) ﴿38﴾ गुनाह करना

खुसूसन झूट बोलना ﴿39﴾ चराग़ को फूंक मार कर बुझा देना
 ﴿40﴾ टूटी हुई कंधी इस्ति'माल करना ﴿41﴾ मां बाप के लिये
 दुआए ख़ैर न करना ﴿42﴾ इमामा बैठ कर बांधना और ﴿43﴾
 पाजामा या शलवार खड़े खड़े पहनना ﴿44﴾ नेक आ'माल में टाल
 मटोल करना ।

(تَعْلِيمُ الْمُتَعَلِّمِ طَرِيقُ التَّعْلَمِ ٧٣ تا ٧٦ باب المدینه کراچی)

ख़ास बात

रिज़क़ में ब-र-कत के तालिब को चाहिये कि वोह
 मज़कूरा बे ब-र-कती के अस्बाब पर नज़र रखते हुए इन से नजात
 की हर मुम्किन सूरत में कोशिश करे येह भी मा'लूम हुवा कि
 कस्ते गुनाह के सबब रिज़क़ में ब-र-कत ख़त्म हो जाती है,
 लिहाज़ा गुनाहों से हर सूरत बचने की कोशिश करे कि गुनाह,
 कसीर आफ़ातो बलिय्यात के नुज़ूल का सबब भी होते हैं ।

लम्हए फ़िक़्रिय्या

अमीरे अहले सुन्नत دامت बركاتهم العالیّه फ़रमाते हैं कि कोई
 अपने किरदार से जाहिर करे कि मैं नमाज़ें भी क़ज़ा करूं और इस
 की नुहूसत के अ-सरात से भी महफूज़ रहूं, खाते पीते वक़्त
 बिस्मिल्लाह शरीफ़ न पढ़ कर शैतान को भी शामिल रखूं और

रिज़्क में ब-र-कत की ख़्वाहिश भी करूं। ख़रीदो फ़रोख़्त के वक़्त हलालो ह़राम की तमीज़ भी न रखूं और रिज़्क में कुशा-दगी का तालिब भी रहूं तो आप खुद फ़ैसला फ़रमाएं! यह किस तरह मुम्किन है कि आग में हाथ डालने वाले का हाथ न जले।

वस्वसए शैतानी की काट

हो सकता है किसी को शैतान यह वस्वसा डाले कि फुलां बे नमाज़ी, ह़राम कमाने वाला और सुन्नतों का तारिक, जो दिन रात **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** और उस के प्यारे रसूल **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ना राज़गी वाले कामों में मशगूल रहता है, मगर उस के रिज़्क में बे ब-र-कती के बजाए, इज़ाफ़ा होता जा रहा है। मेरे प्यारे इस्लामी भाई! यह शैतान का ख़तरनाक वार है! इस न-ज़रिय्ये से सोचेंगे तो फ़ी ज़माना हर जगह दुन्यवी तरक्की में ब जाहिर कुफ़ारे बद अत्वार आगे आगे नज़र आते हैं।

याद रखें! किसी की बद अक्की-दगी व बद आ'मालियों के बा वुजूद दुन्यवी ने'मतों का हुसूल उस के लिये बाइसे फ़ज़ीलत नहीं, लिहाज़ा मुसल्मान को शैतानी वस्वसों में पड़ने के बजाए अपने मसाइल कुरआनो हदीस की रोशनी में ही हल करने चाहिये।

तवज्जोह फ़रमाएँ

उन इस्लामी भाइयों के लिये जो आज तंगदस्ती का शिकार नहीं (दिन रात दुकानें चल रही हैं, लाखों का कारोबार है) मज़कूरा बाला अस्बाब उन के लिये भी बाइसे तशवीश हैं। अगर वोह भी अपनी जात में इन अस्बाब को पाते हैं तो उन्हें चाहिये कि बिना ताख़ीर इन से नजात की सूरत कर के अपनी रोज़ी के तहफ़फ़ुज़ का सामान करें।

तंगदस्ती से नजात

रिज़क़ में ब-र-कत का हुसूल इतना मुशिकल नहीं बशर्ते कि हकीकी ज़राएअ़ से इस के लिये कोशिश हो। जैसा कि हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : खाने से पहले और बा'द में वुजू करना मोहताजी को दूर करता है और येह मु-सलीन (الْحَجْمُ الْأَوْسَطُ، الْحَدِيثُ ٤٧٦، ج ٥، ص ٢٣١، دَارُ الْفَرَغَانَ) की सुन्नतों में से है।

ख़ैरो ब-र-कत का हुसूल

एक और हदीसे मुबा-रका में है कि हज़रते अनस

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ سے रिवायत है कि ताजदारे मदीना
 ने फ़रमाया, जो येह पसन्द करे कि अल्लाह तआला उस के घर में
 ख़ैर ज़ियादा करे तो जब खाना हाज़िर किया जाए, वुजू करे और जब
 उठया जाए उस वक़्त भी वुजू करे या'नी हाथ मुंह धोए ।

(सनن ابن ماجه، كتاب الطهارة، باب الاضوء عند اطعام الحديث، ३३६، ج १، ص १७९، المطبوع بيروت)

खाने के वुजू का तरीका

खाना खाने से पहले और बा'द दोनों हाथ पहुंचों तक
 धोना सुन्नत है । अगर खाने के लिये किसी ने मुंह नहीं धोया तो
 येह नहीं कहेंगे कि इस ने सुन्नत तर्क कर दी ।

(الفتاوى المحمدية، كتاب الكراهية، الباب الحادي عشر، ج ५، ص ३३८، مطبوع الكويت)

अमीरे अहले सुन्नत फ़रमाते हैं कि बद
 किस्मती से आज खाने का वुजू कर के सुन्नत के मुताबिक बैठ कर
 खाना और आख़िर में बरतन चाट कर पानी से धो कर पीने वाली
 मुबारक सुन्नतें मतरूक नज़र आती हैं । काश ! इन मीठी सुन्नतों को
 ज़िन्दा करने के अज़्मे मुसम्मम के साथ तहरीक शुरू हो ।

ऐशो इशरत में वुस्त

सख्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ ف़रमाते

हैं रोटी के टुकड़े और ज़रों को चुन लें कि हृदीसे पाक में है जो शख्स इस तरह करता है उस के ऐशो इशरत में वुसअत की जाती है, और उस के बच्चे सहीह व सलामत और बे ऐब होंगे और वोह टुकड़े हूरों का महर होंगे ।

(کیمیائے سعادت، اصل اول آداب الطعام، باب الماہل از طعام، ج ۱ ص ۲۳۷، انتشارات نجفینہ تهران)

मिल कर खाने में ब-र-कत है

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है, सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमान है कि इकठ्ठे खाओ, अलग अलग न खाओ कि ब-र-कत जमाअत के साथ है ।

(سنن ابن ماجه، کتاب الاطعمه، باب الاجتماع على الطعام، الحدیث ۳۲۸۷، ج ۳ ص ۲۱، دار المعرفه بیروت)

फ़ी ज़माना अल्मिय्या

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज का मुसल्मान सख़्त गरमी में रोज़गार की तलाश में मारा मारा तो फिरता है, मगर बद किस्मती से रिज़्क में ब-र-कत के इन आसान और यक़ीनी हल को अपनाने के लिये तय्यार नहीं । काश ! कि आज मुसल्मान अहकामे इस्लाम पर सहीह मा'नों में कारबन्द हो जाए

तो बे रोज़गारी का मुआ-मला, जो आज बैनल अक्वामी मस्अला बन चुका है, इस पर ब आसानी काबू पाया जा सकता है, और येह हल सिर्फ़ मौजूदा मुसलमानों के लिये ही नहीं बल्कि सारी दुन्या के ग़ैर मुस्लिम भी अगर इस्लाम की दौलत से मालामाल हो कर हकीकी मा'नों में सुन्नतों पर कारबन्द हो जाएं तो अपने मसाइल को ब आसानी हल कर सकते हैं ।

तंगदस्ती से नजात के 20 म-दनी हल

«1» मशाइख़े किराम फ़रमाते हैं कि, दो चीज़ें कभी जम्अ नहीं हो सकतीं मुफ़िलसी और चाशत की नमाज़, (या'नी जो कोई चाशत की नमाज़ का पाबन्द होगा, إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ कभी मुफ़िलस न होगा)

हज़रते शफ़ीक़ बल्ख़ी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं, हम ने पांच चीज़ों की ख़्वाहिश की तो वोह हम को पांच चीज़ों में दस्त-याब हुई । (इस में से एक येह भी है) कि जब हम ने रोज़ी में ब-र-कत त़लब की तो हम को नमाज़े चाशत पढ़ने में मुयस्सर हुई । (या'नी रिज़क़ में ब-र-कत पाई)

(मुलख़ब़स अज़ फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब : फ़ज़ाइले नवाफ़िल, स. 1011)

«2» अय्यामे बैज़ या'नी हर महीने की 13,14 और 15 को रोज़े

रखना। “फुतूहुल अवरद” में मन्कूल है कि तजरिबे से येह बात साबित हो चुकी है कि जो कोई अय्यामे बैज के रोज़े रखे, उस के रिज़्क में वुस्अत होगी। दुन्यावी आफ़तों से महफूज़ रहेगा और (إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ) दोनों जहां मे ब-र-कतों से मालामाल होगा। ﴿3﴾

सूरा वाकिअ का हमेशा बिल खुसूस बा’दे मग़रिब पाबन्दी से पढ़ना। ﴿4﴾ मर्दों को सुन्नते फ़ज़्र अपने घर में पढ़ कर, फ़र्ज़ नमाज़ के लिये मस्जिद में जाना। (बा’ज़ रियावात में आया है, जिस शख्स ने फ़ज़्र की सुन्नतें अपने घर में पढ़ीं, **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उस का रिज़्क कुशादा करता है और उस का अहलो इयाल और रिश्तेदारों से झगड़ा कम हो जाता है और (إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ) उस का ख़ातिमा ईमान पर होगा)। ﴿5﴾ नमाज़े पंजगाना के लिये अज़ान का जवाब देना और इस का एहतिराम बजा लाना, कि लैटा हुवा बैठ जाए और अवरदो वज़ाइफ़ बल्कि तिलावाते कुरआन भी मौकूफ़ कर दे, सर पर (इमामा शरीफ़) टोपी (और इस्लामी बहनें) दुपट्टा वगैरा रख ले, हरगिज़ हरगिज़ दुन्या की कोई बात न करे कि (مَعَادُ اللَّهِ) बुरे ख़ातिमे का अन्देशा है। ﴿6﴾

दीनी मा’लूमात या’नी सुन्नतें सीखने सिखाने में मसरूफ़ रहना। ﴿7﴾ दूसरों तक इल्मे दीन पहुंचाना, अगर्चे कुरआन की एक आयत

या दीन का एक मस्अला कि दूसरों को तुम से जो खैर पहुंचे वोह तुम्हारे लिये मुबारक है। (दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो कर म-दनी कामों में मशगूलियत बिल खुसूस म-दनी इन्आमात से मुअत्तर मुअत्तर म-दनी काफिले में सफ़र इस का एक बेहतरीन ज़रीआ है।) इस जिम्न में किसी ने एक सच्चा वाकिआ सुनाया कि एक मज़दूर ने दा'वते इस्लामी के तीन दिन के म-दनी काफिले में आशिकाने रसूल के हमराह सफ़र किया, वापसी पर सेठ ने बताया कि गोदाम की सफ़ाई के दौरान जो गन्दुम निकली उसे बेच कर रक़म मज़दूरों में तक्सीम की गई, पांच सो रूपै तुम्हारा हिस्सा बना है। मज़दूर हैरत ज़दा रह गया कि छुट्टी न करने की सूत में शायद सिर्फ़ तीन सो रूपै कमाता, मगर الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ म-दनी काफिले में सफ़र की ब-र-कत से पांच सो रूपै मिले। ﴿8﴾ नमाज़े तहज्जुद पढ़ते रहना। ﴿9﴾ तौबा करते रहना और फ़ज़्र की सुन्नतों और फ़ज़ों के दरमियान सत्तर⁷⁰ बार इस्तिफ़ार करना ﴿10﴾ घर में आ-यतुल कुर्सी और सूरए इक्ल्लास पढ़ना, ﴿10﴾ हर नमाज़ के बा'द तस्बीहे फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا पढ़ना (या'नी 33 बार سُبْحَانَ اللهِ, 33 बार الْحَمْدُ لِلَّهِ, और 34 बार اللَّهُ أَكْبَرُ) ﴿12﴾ कुरआने मजीद और

(उ-लमाए अहले सुन्नत की) किताबें दीनी मद्रसों के लिये वक्फ़ करना (मक-त-बतुल मदीना के शाएअ कर्दा रसाइल शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआत, आ'रास और जुलूसे मीलाद वगैरा में तक़सीम करने की तरकीब और गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर कुछ रसाइल रखने का मा'मूल बनाने के साथ अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के हर घर में वक्फ़े वक्फ़े से बदल बदल कर सुन्नतों भरे रसाइल पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाने की म-दनी कोशिश भी रिज़्क में ब-र-कत का एक बेहतरीन ज़रीआ है।)

﴿13﴾ वालिदैन की ख़िदमत में मसरूफ़ रहना, ﴿14﴾ दिन भर में कम अज़ कम एक बार सूरतुल मुज़्जम्मिल और सूरए नबाअ की तिलावत करना, ﴿15﴾ सूरतुल मुल्क बा'दे इशा पढ़ कर सोना, ﴿16﴾ शबे जुमुआ में सूरए कहफ़ पढ़ना, ﴿17﴾ घर में सिका रखना, ﴿18﴾ इसी तरह रिवायत में है कि इतवार के दिन (जो नाखुन) तरश्वाए फ़क्का निकलेगा और तवंगरी (खुशहाली) आएगी। (फैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 549) ﴿19﴾ आशूरा (या'नी दस मुहर्मुल हराम) में मिस्कीनों को खाना खिलाना कि रिवायत के मुताबिक़ आज के

रोज़ जो चीज़ दूसरों को खिलाई पिलाई जाती है साल भर तक उस में ब-र-कत रहती है । इसी लिये मुसल्मानों में खिचड़े का अमल जारी है), ﴿20﴾ ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़ना ।

(मुलख़बस अज़ सुन्नी बिहिश्ती ज़ेवर, स. 609)

हाजत मन्द ग़नी हो गया

एक नेक आदमी था, उस ने ग-ल-बए शौक़ के साथ पांच सो बार दुरूद शरीफ़ का रोज़ाना विर्द शुरूअ कर दिया । इस की ब-र-कत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस को ग़नी कर दिया और ऐसी जगह से उस को रिज़क़ अता फ़रमाया कि उसे पता भी न चल सका, हालां कि इस से पहले वोह मुफ़्लिस और हाजत मन्द था ।

(मुलख़बस अज़ फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 151)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ फ़रमाते हैं : अगर कोई शख़्स मज़क़ूर ता'दाद में दुरूदे पाक का विर्द करे और मज़क़ूर तंगदस्ती के अस्बाब से बचते हुए इस से नजात के हल भी अपनाए, मगर फिर भी उस का फ़क्द (या'नी तंगदस्ती व मोहताजी) दूर न हो तो येह उस की निय्यत का फुतूर (या'नी फ़साद) है कि इस के बातिन में ख़राबी की वज्ह से काम नहीं बन सका ।

दर अस्ल दुरूदे पाक पढ़ने या मज़कूरा अस्बाब से बचने और नजात के हल अपनाने में निर्यत **اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ** और उस के प्यारे हबीब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का कुर्ब हासिल करने की हो तो **اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** मोहताजी जरूर दूर होगी ।

मोहताजी किसे कहते हैं ?

याद रखिये ! मोहताजी सिर्फ़ माल की कमी का नाम नहीं है बल्कि बसा अवकात माल की कसरत के बा वुजूद भी इन्सान मोहताजी का शिक्वा करता है और येह मज़ूम फ़े'ल है । **اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** मज़कूरा आ'माले सालिहा की ब-रकात से कनाअत की दौलत नसीब होगी और कनाअत (या'नी जो मिल जाए उस पर राज़ी रहना) ही अस्ल में ग़ना (या'नी दौलत मन्दी) है और दुन्यावी माल का हरीस (या'नी लालची) ही हकीकत में मोहताज है । कोई ख़्वाह कितना ही मालदार हो, कनाअत वोह ख़ज़ाना है जो कि ख़त्म होने वाला नहीं है और दुन्यवी माल से यकीनन अफ़ज़ल है, क्यूं कि दुन्यवी माल फ़ानी भी है और वबाल भी, कि क़ियामत में हिसाब देना पड़ेगा ।

(मुलख़वस अज फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 152)

दुआए अत्तार **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** : ऐ हमारे मेहरबान अल्लाह हमें दुरूदे पाक की ब-र-कत से माले दुन्या की महब्बत से नजात अता फ़रमा कर क़नाअत की ला ज़वाल ने'मत नसीब फ़रमा ।

أَمِينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

रोज़ी में ब-र-कत का बेहतरीन नुस्खा

हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि एक शख्स ने हुजूरे अक़दस, शफ़ीए रोज़े महशर की खिदमते बा ब-र-कत में हाज़िर हो कर अपनी मुफ़िलसी की शिकायत की । आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया, जब तुम घर में दाख़िल हो तो घर वालों को सलाम करो और अगर कोई न हो तो मुझ पर सलाम अर्ज़ करो और एक बार **قل صَوَّلُوا لِلَّهِ** शरीफ़ पढ़ो । उस शख्स ने ऐसा ही किया फिर अल्लाह तआला ने उस को इतना मालामाल कर दिया कि उस ने अपने हमसायों और रिश्तेदारों की भी खिदमत की । (الْبَاحِ لِحَاكِمِ الْقُرْآنِ، لِلْقُرْطُبِيِّ، ج ٢٠، ص ٢٣١، مطبوعه پشاور)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम भी अगर अपने मसाइल अल्लाह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और उस के प्यारे रसूल **عَزَّ وَجَلَّ** के फ़रमान के मुताबिक़ हल करने की सअूय करें तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ**

दुन्या और आखिरत की बे शुमार भलाइयां हासिल करने में ज़रूर काम्याब होंगे ।

तंगदस्ती का इलाज

जबर दस्त मुहद्दिस हज़रते सय्यिदुना हुदबा बिन ख़ालिद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को ख़लीफ़ए बग़दाद मामून रशीद ने अपने हां मदरू किया, त़अाम के आख़िर में खाने के जो दाने वगैरा गिर गए थे, मुहद्दिस मौसूफ़ चुन चुन कर तनावुल फ़रमाने लगे । मामून ने हैरान हो कर कहा, ऐ शैख़, क्या आप का अभी तक पेट नहीं भरा ? फ़रमाया : क्यूं नहीं ! दर अस्ल बात येह है कि मुझ से हज़रते सय्यिदुना हम्माद बिन स-लमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने एक हदीस बयान फ़रमाई है, जो शख़्स दस्तर ख़वान के नीचे गिरे हुए टुकड़ों को चुन चुन कर खाएगा वो तंगदस्ती से बे ख़ौफ़ हो जाएगा ।”

(اتحاف السادة المستحقين، الباب الاول، ج 5، ص 592، دار الكتب العلمية بيروت)

मैं इसी हदीसे मुबारक पर अमल कर रहा हूँ । येह सुन कर मामून बेहद मु-तअस्सिर हुवा और अपने एक ख़ादिम की तरफ़ इशारा किया तो वोह एक हज़ार दिनार रुमाल में बांध कर लाया । मामून ने उस को हज़रते सय्यिदुना हुदबा बिन ख़ालिद

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَاجِدِ की खिदमत में बतौर नज़राना पेश कर दिया ।
 हज़रते सय्यिदुना हुदबा बिन ख़ालिद عَالِيَهُ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَاجِدِ ने फ़रमाया :
 الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ हदीसे मुबा-रका पर अमल की हाथों हाथ ब-र-कत
 ज़ाहिर हो गई ।
 (تَمْرَاتُ الْأَوْرَاقِ ج ١ ص ٨)

एहतियाते अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ को उमूमन खाना
 खा कर चाय, शरबत वगैरा पीने के बा'द बरतन में पानी डाल कर
 अच्छी तरह हिला जुला कर पीते देखा गया है ताकि रिज़क़ का
 कोई ज़र्रा भी ज़ाएअ न हो, 1423 सि.हि. में स-फ़रे चल मदीना
 के दौरान आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ को देखा गया कि गर्म पानी के
 कप में Tea Pack डाल कर चाय की पत्ती हल फ़रमाई, और दूध
 चीनी डालने से पहले Tea Pack को अच्छी तरह निचोड़ कर
 निकाला (जब कि उमूमन लोग बिगैर निचोड़े फेंक देते हैं, और कोई
 निचोड़ते भी हैं तो चीनी, दूध हल करने के बा'द ।) आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ
 ने जब चाय नोश फ़रमा ली तो अर्ज़ की गई, हुज़ूर ! इस में क्या
 हिक्मत है ? इर्शाद फ़रमाया, मैं ने महसूस किया कि दूध और
 चीनी डालने के बा'द अगर Tea Pack निचोड़ा जाए तो दूध और

चीनी के कुछ अजूज़ा Tea Pack में रह जाएंगे, इस लिये मैं ने एहतियातन पहले निचोड़ लिया, ताकि कोई कारआमद जुज़ जाएअ न होने पाए । (سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ) वाकेई अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** की म-दनी एहतियातें देख कर दौरे अस्लाफ़ की याद ताज़ा हो जाती है ।

हैं शरीअत और तरीक़त की हसीं तस्वीर जो

ज़ोहदो तक्वा के नज़ारे हज़रते अत्तार हैं

अच्छी अच्छी निय्यतों का फल

रिज़क में ब-र-कत के लिये अच्छी अच्छी निय्यतें करना भी बेहद मुफ़ीद है, निय्यतों से मु-तअल्लिक़ मा'लूमात हासिल करने के लिये अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** का मुरत्तब कर्दा निय्यतों का कार्ड मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाख़ से हासिल किया जा सकता है ।

“मुर्शिदुन्ना, शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी” के चालीस हुरूफ़ की निस्बत से ख़ाने की “40 निय्यतें” पेशे ख़िदमत हैं :

अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** की मुरत्तब कर्दा

निय्यतों की ब-र-कत से न सिर्फ़ खाने के मक्सद से आगाही हासिल होगी बल्कि **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** रिज़क की बे हूर्मती से बचाव का म-दनी ज़ेहन मिलने और बे ब-र-कती दूर होने के साथ आख़िरत की ढेरों भलाइयों के हुसूल के अस्बाब भी होंगे ।

खाने की 40 निय्यतें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुसल्मान की निय्यत उस के अमल से बेहतर है ।

(طبرانی المعجم الكبير، حديث 5932، ج 5، ص 85، وارجاء التراث العزبي بيروت)

«1,2» खाने से क़ब्ल और बा'द का वुजू करूंगा (या'नी हाथ मुंह का अगला हिस्सा धोऊंगा और कुल्लियां करूंगा) «3» इबादत «4» तिलावत «5» वालिदैन की खिदमत «6» तहूसीले इल्मे दीन «7» सुन्नतों की तरबिय्यत की खातिर म-दनी काफ़िले में सफ़र «8» अलाकाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत «9» उमूरे आख़िरत और «10» हस्बे ज़रूरत कस्बे हलाल के लिये भागदौड़ पर कुव्वत हासिल करूंगा (येह निय्यतें उसी सूरत में मुफ़ीद होंगी जब कि भूक से कम खाए ख़ूब डट कर खाने से उल्टा इबादत में सुस्ती पैदा होती गुनाहों की तरफ़ रुज़्हान बढ़ता और पेट की

ख़राबियां जनम लेती हैं) ﴿11﴾ ज़मीन पर ﴿12﴾ दस्तर ख़्वान बिछाने की सुन्नत अदा कर के ﴿13﴾ सुन्नत के मुताबिक़ बैठ कर ﴿14﴾ खाने से क़व्ल बिस्मिल्लाह और ﴿15﴾ दीगर दुआएं पढ़ कर ﴿16﴾ तीन उंग्लियों से ﴿17﴾ छोटे छोटे निवाले बना कर ﴿18﴾ अच्छी तरह चबा कर खाऊंगा ﴿19﴾ हर दो एक लुक़मे पर **يا واجد** पढ़ूंगा ﴿20﴾ जो दाना वगैरा गिर गया उठा कर खा लूंगा ﴿21﴾ रोटी का हर निवाला सालन के बरतन के ऊपर कर के तोड़ूंगा ताकि रोटी के ज़र्रात बरतन ही में गिरें ﴿22﴾ हड्डी और गर्म मसा-लहा अच्छी तरह साफ़ करने और चाटने के बा'द फेंकूंगा ﴿23﴾ भूक से कम खाऊंगा ﴿24﴾ आख़िर में सुन्नत की अदाएगी की निय्यत से बरतन और ﴿25﴾ तीन बार उंग्लियां चाटूंगा ﴿26﴾ खाने के बरतन धो कर पी कर एक गुलाम आज़ाद करने के सवाब का हक़दार बनूंगा ﴿27﴾ जब तक दस्तर ख़्वान न उठा लिया जाए उस वक़्त तक बिला ज़रूरत नहीं उठूंगा (कि येह भी सुन्नत है) ﴿28﴾ खाने के बा'द मस्नून दुआएं पढ़ूंगा ﴿29﴾ ख़िलाल करूंगा ।

मिल कर खाने की मज़ीद निय्यतें

﴿30﴾ दस्तर ख़्वान पर अगर कोई अ़लिम या बुजुर्ग मौजूद हुए तो

उन से पहले खाना शुरूअ नहीं करूंगा ﴿31﴾ मुसल्मानों के कुर्ब की ब-र-कतें हासिल करूंगा ﴿32﴾ उन को बोटी, कद्दू शरीफ, खुरचन और पानी वगैरा की पेशकश कर के उन का दिल खुश करूंगा ﴿33﴾ उन के सामने मुस्कुरा कर स-दके का सवाब कमाऊंगा ﴿34﴾ खाने की निय्यतें और ﴿35﴾ सुन्नतें बताऊंगा ﴿36﴾ मौकअ मिला तो खाने से कब्ल और ﴿37﴾ बा'द की दुआएं पढ़ाऊंगा ﴿38﴾ गिज़ा का उम्दा हिस्सा म-सलन बोटी वगैरा हिर्स से बचते हुए दूसरों की खातिर ईसार करूंगा ﴿39﴾ उन को खिलाल का तोहफ़ा पेश करूंगा ﴿40﴾ खाने के हर एक दो लुक़्मे पर हो सका तो इस निय्यत के साथ बुलन्द आवाज़ से **يا واجد** कहूंगा कि दूसरों को भी याद आ जाए ।

दौराने त़आम पानी और बा'दे त़आम चाय पीने की तरकीब रहती है । लिहाज़ा चाय और पानी पीने की निय्यतें भी पेशे ख़िदमत हैं ।

“सरकार की चुण्णत मरहबा” के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से पानी पीने की 15 निय्यतें

﴿1﴾ इबादत ﴿2﴾ तिलावत ﴿3﴾ वालिदैन की ख़िदमत ﴿4﴾ तहूसीले

इल्मे दीन ﴿5﴾ सुन्नतों की तरबियत की खातिर म-दनी काफ़िले में सफ़र ﴿6﴾ अलाकाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत ﴿7﴾ उमूरे आख़िरत और ﴿8﴾ हस्बे ज़रूरत कस्बे हलाल के लिये भागदौड़ पर कुव्वत हासिल करूंगा। येह निय्यतें उसी वक़्त मुफ़ीद होंगी जब कि फ़ीज़र या बर्फ़ का ख़ूब ठन्डा पानी न हो कि ऐसा पानी मज़ीद बीमारियां पैदा करता है। ﴿9﴾ बैठ कर ﴿10﴾ बिस्मिल्लाह पढ़ कर ﴿11﴾ उजाले में देख कर ﴿12﴾ चूस कर ﴿13﴾ तीन सांस में पियूंगा ﴿14﴾ पी चुकने के बा'द الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ कहूंगा ﴿15﴾ बचा हुवा पानी नहीं फेंकूंगा।

“इल्मे दीन” के छ हुरूफ़ की निस्बत से चाय पीने की 6 निय्यतें

﴿1﴾ बिस्मिल्लाह पढ़ कर पियूंगा ﴿2﴾ सुस्ती उड़ा कर इबादत ﴿3﴾ तिलावत ﴿4﴾ दीनी किताबत और ﴿5﴾ इस्लामी मुता-लए पर कुव्वत हासिल करूंगा ﴿6﴾ पीने के बा'द الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ कहूंगा।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ फ़रमाते हैं, इस तरह के मकासिदे ह-सना या'नी अच्छे मक्सदों के हुसूल की

निय्यतों से पियेंगे तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** हर हर निय्यत पर जुदा जुदा सवाब मिलेगा। म-दनी मश्वरा है कि दिन रात में सिर्फ़ दो तीन बार आधे कप चाय से गुज़ारा कीजिये। ज़ियादा चाय पेट में उंडेलने वाले का शूगर, गुर्दा और मसाना वगैरा के अमराज़ से बचना सख़्त दुश्वार है।

अच्छी अच्छी निय्यतों से मु-तअल्लिक़ रहनुमाई के लिये, अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** का मुन्फ़रिद सुन्नतों भरा बयान “निय्यत का फल” और आप के मुरत्तब कर्दा दीगर कार्डज़ या पेम्फ़लेट मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाख़ से हासिल फ़रमाएं।

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआत, आ'रास और जुलूसे मीलाद वगैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ कर्दा रसाइल तक़सीम कर के सवाब कमाइये। गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर कुछ रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये। अख़बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के हर घर में वक्फ़े वक्फ़े से बदल बदल कर सुन्नतों भरे रसाइल पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये।

ईमान की हिफाज़त

शैतान लाख सुस्ती दिलाए मगर इस मज़्मून का अक्वल ता आख़िर ज़रूर मुता-लआ फ़रमाएँ।

الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ हम मुसलमान हैं और मुसलमान की सब से कीमती चीज़ ईमान है। आ'ला हज़रत رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का इर्शाद है : जिस को जिन्दगी में सल्बे ईमान का ख़ौफ़ नहीं होता, नज़्अ के वक़्त उस का ईमान सल्ब हो जाने का शदीद ख़तरा है। (बुरे ख़ातिमे के अस्बाब, स. 14) ईमान की हिफ़ाज़त का एक ज़रीआ किसी "मुर्शिदे कामिल" से मुरीद होना भी है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाता है :

يَوْمَ نَدْعُو كُلَّ أُنَاسٍ بِإِمامِهِمْ ۗ तर-ज-मए कन्जुल ईमान : "जिस दिन हम हर जमाअत को उस के इमाम के साथ बुलाएंगे।"

नूरुल इरफ़ान फ़ी तफ़सीरुल कुरआन में मुफ़स्सिरे शहीर मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحِمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इस आयते मुबा-रका की शर्ह करते हुए फ़रमाते हैं : "इस से मा'लूम हुवा कि दुन्या में किसी सालेह को अपना इमाम बना लेना चाहिये

शरीअत में “तक्लीद” कर के, और तरीक़त में “बैअत” कर के, ताकि हशर अच्छों के साथ हो। अगर सालेह इमाम न होगा तो उस का इमाम शैतान होगा। इस आयत में तक्लीद, बैअत और मुरीदी सब का सुबूत है।”

आज के पुर फ़ितन दौर में पीरी मुरीदी का सिल्लिसला वसीअ तर ज़रूर है, मगर कामिल और नाक़िस पीर का इम्तियाज़ मुशक़ल है। यह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ास करम है! कि वोह हर दौर में अपने प्यारे महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की उम्मत की इस्लाह के लिये अपने औलियाए किराम पैदा फ़रमाता है। जो अपनी मुअमिनाना हिक्मतो फ़िरासत के ज़रीए लोगों को अपनी और दीगर मुसलमानों की इस्लाह का म-दनी ज़ेहन देने की कोशिश फ़रमाते हैं।

जिस की एक मिसाल तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी का म-दनी माहोल हमारे सामने है। जिस के अमीर, बानिये दा'वते इस्लामी, अमीरे अहले सुन्नत अबू बिलाल हज़रत अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ हैं, जिन की

निगाहे विलायत ने लाखों मुसलमानों बिल खुसूस नौ जवानों की ज़िन्दगियों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया ।

आप **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** ख़लीफ़ए कुत्बे मदीना, मुफ़ितये आ'ज़म पाकिस्तान हज़रते मुफ़ती वकारुद्दीन कादिरि **عَلَيْهِ الرَّحْمَهُ** के पूरी दुनिया में वाहिद ख़लीफ़ा हैं । (आप को शारेहे बुख़ारी, फ़कीहे आ'ज़मे हिन्द मुफ़ती शरीफ़ुल हक़ अमजदी **عَلَيْهِ الرَّحْمَهُ** ने सलासिले अर्बआ कादिरिय्या, चिशितय्या, नक़शबन्दिय्या और सुहर वर्दिय्या की ख़िलाफ़त व कुतुब व अहादीस वग़ैरा की इजाज़त भी अता फ़रमाई, जा नशीन शहज़ादए सय्यिदी कुत्बे मदीना हज़रत मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान साहिब अशरफ़ी **عَلَيْهِ الرَّحْمَهُ** ने भी अपनी ख़िलाफ़त और हासिल शुदा असानीद व इजाज़ात से नवाज़ा है । दुन्याए इस्लाम के और भी कई अकाबिर उ-लमा व मशाइख़ से आप को ख़िलाफ़त हासिल है ।)

अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** सिल्लिसलए अ़ालिया कादिरिय्या र-ज़विय्या में मुरीद करते हैं, और कादिरि सिल्लिसले की तो क्या बात है ! कि हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं : “मैं अपने मुरीदों का क़ियामत तक के लिये तौबा पर मरने का (ब फ़ज़ले ख़ुदा) ज़ामिन हूँ ।” (**بَهْجَةُ الْأَسْرَارِ ص 191، مطبوعه دارالكتب العلميه بيروت**)

म-दनी मश्वरा : जो किसी का मुरीद न हो उस की खिदमत में म-दनी मश्वरा है कि इस ज़माने के सिल्सिलए आलिया कादिरिय्या र-जविय्या के अज़ीम बुजुर्ग शैखे तरीकत **अमीरे अहले सुन्नत** **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** की ज़ाते मुबा-रका को ग़नीमत जाने और बिला ताख़ीर इन का मुरीद हो जाए। यकीनन मुरीद होने में नुक्सान का कोई पहलू ही नहीं, दोनों जहां में **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** फ़ाएदा ही फ़ाएदा है।

शैतानी रुकावट : मगर येह बात ज़ेहन में रहे ! कि चूँकि हुज़ूरे ग़ौसे पाक **عَلَيْهِ الرُّحْمَةُ** का मुरीद बनने में ईमान के तहफ़्फुज़, मरने से पहले तौबा की तौफीक, जहन्नम से आज़ादी और जन्त में दाख़िले जैसे अज़ीम मनाफ़ेअ मौजूद हैं। लिहाज़ा शैतान आप को मुरीद बनने से रोकने की भरपूर कोशिश करेगा।

आप के दिल में ख़याल आएगा, मैं ज़रा मां बाप से पूछ लूं, दोस्तों का भी मश्वरा ले लूं, ज़रा नमाज़ का पाबन्द बन जाऊं, अभी जल्दी क्या है, ज़रा मुरीद बनने के काबिल तो हो जाऊं, फिर मुरीद भी बन जाऊंगा। मेरे प्यारे इस्लामी भाई ! कहीं काबिल बनने के इन्तिज़ार में मौत न आ संभाले, लिहाज़ा मुरीद बनने में

ताखीर नहीं करनी चाहिये ।

श-ज-रए अत्तारिय्या : الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ अमीरे अहले सुन्नत
 دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ने एक बहुत ही प्यारा “श-जरा शरीफ़” भी
 मुरत्तब फ़रमाया है । जिस में गुनाहों से बचने के लिये, काम अटक
 जाए तो उस वक़्त, और रोज़ी में ब-र-कत के लिये क्या क्या
 पढ़ना चाहिये, जादू टोने से हिफ़ज़त के लिये क्या करना चाहिये,
 इसी तरह के और भी बहुत से “अवराद” लिखे हैं ।

इस श-जरे को सिर्फ़ वोही पढ़ सकते हैं, जो अमीरे अहले
 सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ के ज़रीए क़ादिरि र-ज़वी अत्तारी सिल्सिले
 में मुरीद या तालिब होते हैं । इस के इलावा किसी और को पढ़ने की
 इजाज़त नहीं । लिहाज़ा अपने घर के एक एक फ़र्द बल्कि अगर एक
 दिन का बच्चा भी हो तो उसे भी सरकारे ग़ौसे आ'ज़म
 رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के सिल्सिले में मुरीद करवा कर क़ादिरि र-
 ज़वी अत्तारी बनवा दें ।

बल्कि उम्मत की ख़ैर ख़्वाही के पेशे नज़र, जहां आप
 खुद अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ से मुरीद होना पसन्द
 फ़रमाएं वहां इन्फ़रादी कोशिश के ज़रीए अपने अज़ीज़ो अक़िबा

और अहले ख़ाना, दोस्त अहबाब व दीगर मुसलमानों को भी तरगीब दिला कर मुरीद करवा दें।

मुरीद बनने का तरीक़ा

बहुत से इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें, इस बात का इज़हार करते रहते हैं कि हम अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه** से मुरीद या त़ालिब होना चाहते हैं, मगर तरीक़ाए कार मा'लूम नहीं, तो अगर आप मुरीद बनना चाहते हैं, तो अपना और जिन को मुरीद या त़ालिब बनवाना चाहते हैं उन का नाम, एक सफ़हे पर तरतीब वार बमअ वल्दियत व उम्र लिख कर "मजलिसे मक्तूबातो ता वीजाते अत्तारिय्या" फैज़ाने मदीना, टन टन पूरा, स्ट्रीट खड़क, मुम्बई के पते पर रवाना फ़रमा दें, तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** उन्हें भी सिल्सिलए कादिरिय्या र-जविय्या अत्तारिय्या में दाख़िल कर लिया जाएगा। इस के लिये नाम लिखने का तरीक़ा भी समझ लें, म-सलन लड़की हो तो अमीना बिनते मुहम्मद हाशिम उम्र तक़रीबन तीन माह और लड़का हो तो मुहम्मद अमीन बिन मुहम्मद इमरान उम्र तक़रीबन सात साल, अपना मुकम्मल पता लिखना हरगिज़ न भूलें (पता अंग्रेज़ी के केपीटल हुरूफ़ में लिखें)

E-Mail : Attar@dawateislami.net

“कादिरी अत्तारी” या “कादिरिय्या अत्तारिय्या” बनवाने के लिये नाम व पता बोल पेन से और बिल्कुल साफ़ लिखें। गैर मशहूर नाम या अल्फ़ाज़ पर लाज़िमन ए'राब लगाएं। अगर तमाम नामों के लिये एक ही पता काफ़ी हो तो दूसरा पता लिखने की हाजत नहीं।

नम्बर शुमार	नाम	बिन या बिन्ते	वालद का नाम	उम्र	मुकम्मल पता

म-दनी मश्वरह : इस फ़ॉर्म को महफूज़ कर लें और इस की मज़ीद कोपियां करवा लें।



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
الصلوة والسلام عليك يا رسول الله



रिज़क़ और उम्र में ब-र-कत का बेहतरीन नुस्खा

इमामे अहले सुन्नत, शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ ने फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ में एक सुवाल के जवाब में जो फ़रमाया, उस का खुलासा येह है कि

“येह कहने में हरज नहीं कि **मुरीद बनने से उम्र और रिज़क़ में ब-र-कत होती है** क्यूं कि किसी जामेए शराइत पीर की बैअत करना “बिर” या’नी नेकी है और **मुत्लक़न नेकी से रिज़क़ बढ़ता है और उम्र में ब-र-कत होती है।**” (फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़, जि. 24, स. 173, मत्बूअ़ा रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर)

मा’लूम हुवा कि मुत्तबेए सुन्नत, जामेए शराइत **मुर्शिदे कामिल** से मुरीद होना उम्र और रिज़क़ में ब-र-कत का ज़रीआ है।

(मज़ीद मा’लूमात के लिये इसी रिसाले का सफ़हा 33 ता 38 मुत्ता-लआ फ़रमाएं)